स्त्री एकता का स्कूल : रजनी तिलक

डॉ. राजेश कुमार

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिंदी विभाग,
सत्यवती कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय,
नई दिल्ली

सारांश

पितृसत्ता के समक्ष सभी स्त्रियाँ दलित हैं लेकिन एक सवर्ण स्त्री जो पितृसत्ता द्वारा शोषित है, वह भी जातिगत विशेषाधिकार प्राप्त करके दलित स्त्रियों के प्रति भेदभावपूर्ण और दमनकारी भूमिका निभाती हैं। अभिजात्यवादी स्त्री विमर्श में दलित -आदिवासी स्त्रियाँ भीड़ की तरह शामिल की जाती हैं, नेतृत्व में उन्हें स्थान नहीं दिया जाता। दुनिया भर के समाजों में स्त्री एकरैखिक सामाजिक-लैंगिक श्रेणी नहीं है। स्त्रियों में सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक स्तरीकरण है। जैसे उत्तर भारत और पूर्वोत्तर भारत की स्त्रियों की स्थिति एक जैसी नहीं है। ऐसे ही कश्मीर की स्त्री और देश के बाकी हिस्सों की स्त्रियों की हालत एक जैसी नहीं है। भारत में जाति की विशिष्टता के कारण यहाँ भी अछूत और दलित-आदिवासी स्त्रियों की सामाजिक-आर्थिक-लैंगिक हैसियत भी सवर्ण स्त्री जैसी नहीं है। रजनी तिलक एक स्त्रीवादी एक्टिविस्ट और लेखिका थीं। उनकी कहानी और कविताएँ स्त्री मुक्ति के स्वप्न और संघर्ष का दस्तावेज हैं। उनका स्त्री विमर्श किताबी नहीं है बल्कि जीवन संघर्षों और अनुभवों की निर्मिति है। उन्होंने अपने अनुभवों से जाना कि स्त्री मुक्ति की राह में जाति एक बड़ी बाधा है। स्त्री विमर्श एवं आन्दोलन की सफलता के लिए सभी स्त्रियों के बीच एकता होना जरूरी है। स्वम् को डिकास्ट और डिक्लास करके स्त्री विमर्श और आन्दोलन को व्यापक बनाने की जरूरत है। रजनी तिलक का एक्टिविज्म, लेखन और जीवन स्त्री की पाठशाला बना।

बीज-शब्द: दलित स्त्री, स्त्री एकता, स्त्री विमर्श, स्त्री आन्दोलन, दलित महिला आंदोलन, पितृसत्ता, ब्राह्मणी पितृसत्ता, अम्बेडकरवादी स्त्रीवाद, एक्टिविज्म, दलित महिला लेखन, जातिभेद एवं उत्पीड़न, लैंगिक भेद।

प्रस्तावना

'सभी स्त्रियाँ दलित होती हैं, लेकिन कुछ स्त्रियाँ अफसर, मंत्री, मुख्यमंत्री और प्रधानमंत्री भी होती हैं।'

'सभी स्त्रियाँ दलित होती हैं, लेकिन कुछ स्त्रियाँ ब्राह्मणी, क्षत्राणी और श्रमजीवी भी होती हैं।'

उपर्युक्त टिप्पणियों का आशय यह है कि भारतीय स्त्री विमर्श अक्सर दावा करता है कि सभी स्त्रियाँ दलित

हैं, स्त्री राजा की हो या रंक की सभी स्त्रियाँ उत्पीड़ित हैं। जबकि दलित लेखन और दलित महिला लेखन स्पष्ट करता है कि सभी स्त्रियों की जीवन स्थितियाँ एक जैसी नहीं हैं। वे जाति - धर्म एवं अन्य आधारों पर विभाजित हैं। एक सवर्ण स्त्री जो पितृसत्ता द्वारा शोषित है, वह भी जातिगत विशेषाधिकार प्राप्त करके दलित स्त्रियों के प्रति भेदभावपूर्ण और दमनकारी भूमिका निभाती हैं। अभिजात्यवादी स्त्री विमर्श में दलित -आदिवासी स्त्रियाँ भीड़ की तरह शामिल की जाती हैं, नेतृत्व में उन्हें कोई स्थान नहीं दिया जाता।

शोध-विस्तार

रजनी तिलक एक स्त्रीवादी एक्टिविस्ट और लेखिका थीं। उनकी कहानी और कविताएँ स्त्री मुक्ति के स्वप्न और संघर्ष का दस्तावेज हैं। उनका स्त्री विमर्श किताबी नहीं है बल्कि जीवन संघर्षों और अनुभवों की निर्मिति है। उन्होंने आरंभ से ही विभिन्न स्त्रीवादी संगठनों से जुड़कर सक्रिय भूमिका निभाई। रजनी तिलक ने अपने अनुभवों से जाना कि जातिभेद स्त्री मुक्ति के मार्ग की बहुत बड़ी बाधा है। उनकी आत्मकथा 'अपनी ज़मी अपना आसमां' में दर्ज अनुभव भी यही बताते हैं कि जातिभेद और उत्पीड़न के मामले में सवर्ण स्त्रियाँ पुरुषों से ज्यादा कट्टर हैं। रजनी तिलक का जन्म जिस दलित बस्ती (दिल्ली की मछली वाला बस्ती) में हुआ, वहाँ लेखिका को जातिभेद का प्रत्यक्ष अनुभव नहीं हुआ "क्योंकि पूरी ही दलितों की बस्ती यानी जाटवों का मोहल्ला था। अतः आपसी भेदभाव, खान-पान का कोई भेदभाव नहीं था। परंतु बस्ती से बाहर निकलते ही छूआछूत से उपजे भेदभावों के थपेड़ों की मार खाकर जब बस्ती के मर्द लोग वापस शाम को लौटते तो वे अपमान, निराशा और कुंठा से भरे हुए होते।"¹

सीलमपुर शिफ्ट होने के बाद रजनी तिलक को जातिभेद का प्रत्यक्ष अनुभव एक जाट महिला के जातिवादी और दमनकारी व्यवहार से हुआ। अशिक्षित और पिछड़ी महिलाएँ ही कट्टर जातिवादी नहीं थीं अपितु रजनी तिलक के अनुभव संसार में आने वाली प्रगतिशील, स्त्रीवादी और रेडिकल स्त्रियाँ भी जातिवादी और अभिजात्यवादी थीं। लेखिका रजनी तिलक ने ऐसे स्त्री चरित्रों को आधार बनाकर कहानी-कविताएँ भी लिखीं। उन्होंने अपने अनुभवों से जाना-समझा कि 'औरत औरत में अंतर है' वह बिना किसी लाग लपेट के कहती हैं -

"एक भंगी तो दूसरी बामणी
एक डोम तो दूसरी ठकुरानी
दोनों सुबह से शाम खटती हैं

बेशक एक दिनभर खेत में
दूसरी घर की चारदीवारी में...
एक सताई जाती है स्त्री होने के कारण

दूसरी सताई जाती है स्त्री और दलित होने ..."²

विभिन्न आधारों पर स्त्रियों की सामाजिक स्थितियों में भिन्नता एक बात है जबकि इन भिन्नताओं के आधार स्त्रियों का विभाजित होना दूसरी बात है। 'स्त्रियों की भिन्नता' और 'स्त्रियों के बीच विभाजन' के इस अंतर

को रजनी तिलक भली प्रकार समझती थीं। वह स्त्रियों की भिन्नता में भी एकता की संभावनाओं को निरंतर खोजती रहीं। उन्होंने सवर्ण एवं अभिजात्यवादी स्त्रियों के स्त्रीवाद पर सवाल उठाए तो इसका अर्थ यह नहीं कि वह स्त्री विरोधी थीं या स्त्रीवादी आंदोलन में कोई फूट डाल रही थीं बल्कि इसका अर्थ यह है कि वह सवर्ण एवं अभिजात्यवादी स्त्रीवाद के दोहरे मापदंडों को रेखांकित करके हिप्पोक्रेट स्त्रीवादियों को आगाह कर रही थीं कि स्त्री विमर्श एवं आंदोलनों की सफलता के लिए सभी वर्गों एवं जातियों की महिलाओं के बीच एकता होना जरूरी है। सवर्ण स्त्री एवं दलित स्त्रियों की एकता का सूत्र देते समय एक्टिविस्ट लेखिका रजनी तिलक विभिन्न सामाजिक स्तरीकरणों को रेखांकित करते हुए सभी स्त्रियों की एकता की बात करती हैं - "दुनिया भर के समाजों में स्त्री एकलैखिक सामाजिक-लैंगिक श्रेणी नहीं है। स्त्रियों में सामाजिक, आर्थिक, भौगोलिक स्तरीकरण है। जैसे उत्तर भारत और पूर्वोत्तर भारत की स्त्रियों की स्थिति एक जैसी नहीं है। ऐसे ही कश्मीर की स्त्री और देश के बाकी हिस्सों की स्त्रियों की हालत एक जैसी नहीं है। भारत में जाति की विशिष्टता के कारण यहाँ भी अछूत और दलित-आदिवासी स्त्रियों की सामाजिक-आर्थिक-लैंगिक हैसियत भी सवर्ण स्त्री जैसी नहीं है।"³

भारत में स्त्री विमर्श और आन्दोलनों की नेत्री (सवर्ण स्त्रियों) के एजेंडे में दलित, आदिवासी और मुस्लिम स्त्रियों को अदर (अन्य) की तरह शामिल किया गया और भीड़ की तरह इस्तेमाल किया गया। उनके प्रति सवर्ण एवं अभिजात्यवादी स्त्रियों ने सहानुभूति का प्रदर्शन तो किया लेकिन समानता का अधिकार नहीं दिया। वे दलित-आदिवासी स्त्रियों की स्वघोषित प्रवक्ता बनी रहीं, उनकी पीड़ा और परिस्थितियों को समझे बिना उनके प्रश्नों को अनसुना करके स्त्री विमर्श और आन्दोलन के एजेंडे सेट करती रहीं। रजनी तिलक ने सवर्ण एवं अभिजात्यवादी स्त्रीवाद के एजेंडे के दोहरे मापदंडों पर दो टूक शब्दों में सवाल उठाए और कविता कहानी के माध्यम से भी सवाल उठाए। 'अस्मितावादी' कहानी में उन्होंने एक ऐसी ही स्त्रीवादी लेखिका का व्यंग्यचित्र बनाया है, जो उच्चवर्गीय और सवर्ण है, बिहार विधानसभा की पूर्व सदस्य है, दलित आदिवासी स्त्रियों की स्वघोषित प्रवक्ता भी है। वह विभिन्न मंचों पर दलित आदिवासी स्त्रियों के प्रति सहानुभूति का प्रदर्शन करती है, उनके पक्ष में ओजस्वी व्याख्यान देती है। लेकिन अपनी घरेलू नौकरानी (आदिवासी लड़कियों) के प्रति अन्याय और अत्याचार करती है। खाना खाते समय दाल में कंकड़ आ जाता है

तो वह दाल उस आदिवासी लड़की के ऊपर उँडेल देती है । इस प्रकार रजनी तिलक इस कहानी में यह दिखाने में सफल हुई हैं कि उस उच्चवर्गीय सवर्ण अस्मितावादी राधिका बंसल की प्रगतिशीलता फर्जी है, सहानुभूति कृत्रिम है। दलित, आदिवासी और वंचित स्त्रियाँ उसके लिए कहानी- कविताओं के विषय मात्र हैं । वह उनके प्रति सहानुभूति प्रकट करके, उनके पक्ष में जोरदार व्याख्यान देकर और पुस्तकें लिखकर प्रगतिशीलता का तमगा पाकर अस्मितामूलक विमर्शों के नेतृत्व पर कब्जा बनाये रखना चाहती है।

रजनी तिलक ने एक उच्चवर्गीय सवर्ण स्त्री के इस व्यंग्यचित्र के माध्यम से तथाकथित अस्मितावादियों की कथनी और करनी का अंतर रेखांकित करते हुए अस्मितावादी नेतृत्व की ईमानदारी, लेखकीय ईमानदारी और संवेदनशीलता का प्रश्न उठाया है। रजनी तिलक सवर्ण अभिजात्यवादी लेखिकाओं के एजेंडे पर सवाल उठाते हुए एक कविता में पूछती हैं –

"एक योनि सवर्ण बहना की
उन्हें अपनी योनि पर
खुद का नियंत्रण चाहिए
तब दलित स्त्री की आबरू पर
बाजारू नियंत्रण क्यों ?
धन्य हो आपके बहनापे का
आप जैसी जिनकी मुक्तिदात्री हों

उनकी मुक्ति क्या, गुलामी क्या? "4

कठोर और तीखे अंदाज में पूछे गए रजनी तिलक के प्रश्नों को प्रतिक्रियावादी मानकर अनसुना कर देना और उन्हें लड़ाई कहकर उपेक्षित कर देना एक सरल मार्ग हो सकता है लेकिन इन प्रश्नों में निहित सच्चाई को स्वीकार करके उसका सामना करना ही स्त्री विमर्श और आन्दोलन के लिए हितकर है । रजनी तिलक का एक्टिविज्म और लेखन आत्मालोचना के लिए आमंत्रित करता है कि अभी तक सवर्ण एवं दलित स्त्रियों के बीच एकता क्यों नहीं हो सकी है? दलित-आदिवासी स्त्रियों के प्रश्न और मुद्दे स्त्रीवादियों के एजेंडे के केंद्र में क्यों नहीं आते? यह दोहरापन क्यों है? इसी आशय के उनकी एक कविता के कुछ अंश दृष्टव्य हैं -

"कल तक हमने भी बहनापे के राग अलापे
हाँ, 'जागोरी', 'सहेली', 'निरंतर'
'फोरम' की बहनों के साथ

हमारे जज्बात सब सांझे थे
परन्तु आज
शरीर और मन से आजाद
तुम
तुम्हारा सुंदर संसार
हम कहाँ हैं इस दुनिया में? 5

रजनी तिलक ने स्त्रीवादियों से ही नहीं अपितु दलित लेखकों से भी तीखे सवाल पूछे । उन्होंने स्त्री एकता के अलावा दलित एकता का सवाल भी मुखरता से उठाया। स्त्री एकता, दलित एकता, स्त्रीवाद एवं दलितवाद की एकता या विभिन्न अस्मितावादी विमर्शों की एकता पर बल दिया । उन्होंने दलित लेखकों की पुरुषवादी मानसिकता पर और स्त्रीवादी लेखिकाओं की जातिवादी-अभिजात्यवादी मानसिकता पर तीक्ष्ण प्रहार किए । वास्तविकता भी यही है कि दलित विमर्श पुरुष वर्चस्व का शिकार हुआ और स्त्री विमर्श जातिवाद और अभिजात्यवाद में संकुचित हो गया ।

दलित लेखिकाओं की उपेक्षा दलित मंचों पर पुरुष वर्चस्व के कारण और स्त्रीवादी मंचों पर जातिभेद के कारण हुई । रजनी तिलक के एक्टिविज्म और लेखन के केंद्र में दलित स्त्रियाँ थीं । अतः उन्होंने अखिल भारतीय स्तर पर दलित लेखिकाओं का अलग मंच बनाने का ऐतिहासिक काम किया । इस संदर्भ में रजनी अनुरागी लिखती हैं -

"स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति लेने के बाद दीदी (रजनी तिलक) ने अपने दिमाग में दो चीजें एकदम पक्के तौर पर अपने लिए तय कर ली थीं। पहली, 'राष्ट्रीय दलित महिला आन्दोलन' और दूसरी, 'अखिल भारतीय दलित लेखिका मंच' । इन दोनों संगठनों को बनाने और खड़ा करने में उन्होंने सारी ऊर्जा लगा दी । वैसे तो वह शुरू से ही महिला और खास तौर पर दलित महिला मुद्दों पर सक्रिय थीं। 'सहेली' से लेकर 'कदम' और 'नैक्डोर' जैसे संगठनों में वे महिलाओं, दलित, आदिवासी और पसमांदा समाज की महिलाओं के उत्पीड़न, शोषण और जेंडर बायसनेस जैसे मसलों पर अपनी आवाज विभिन्न रूपों में उठाती रहीं ।"6

यद्यपि 'अखिल भारतीय दलित लेखिका मंच' उनका ड्रीम प्रोजेक्ट था। तथापि इसके पूर्व भी उन्होंने कई

महत्वपूर्ण एवं ऐतिहासिक कार्य किये थे। सामाजिक-आर्थिक रूप से अत्यंत साधारण दलित परिवार में जन्मी लड़की (रजनी तिलक) बचपन में संकोची स्वभाव की थी। बचपन से ही मिली उपेक्षा ने उस लड़की को आत्मविश्वास अर्जित करने का भी अवसर नहीं दिया था। जिन बस्तियों में उस लड़की का बचपन बीता, वहाँ गरीबी, अशिक्षा, अंधविश्वास, जातीय हिंसा और आतंक का साम्राज्य था। पिछड़ेपन और अंधविश्वासों के अंधेरों से अभी तक उस लड़की की चेतना मुक्त नहीं हो सकी थी। वह तमाम तरह की धार्मिक रूढ़ियों का पालन करती थी, परिवार की आर्थिक समृद्धि की कामना से व्रत-अनुष्ठान भी करती थी। लेकिन कुछ समय बाद वह अपने भाई मनोहर और उसके मित्र रमेश को पथप्रदर्शक के रूप में पाकर आत्मविश्वास अर्जित करती है। वह अंबेडकरवादी विचारों एवं प्रगतिशील साहित्य का अध्ययन करती है और जहालत के अंधेरे में डूबी उसकी चेतना भी प्रकाशमान हो उठती है। इस प्रकार वह अतिसाधारण लड़की आई. टी. आई. कोर्स करते हुए एक्टिविज्म शुरू करके जिस मुकाम पर पहुँचती है, वहाँ हम उसे रजनी तिलक के रूप में पहचानते और सैल्यूट करते हैं क्योंकि जो साधारण सी लड़की अपने लिए कोई सपना नहीं देख पाती थी, उसने समतामूलक समाज के निर्माण का सपना देखा और इस सपने के प्रति स्वम् को पूरी तरह समर्पित कर दिया। एक्टिविज्म के आरंभिक दिनों में रजनी तिलक पी.एस.ओ. नाम के प्रगतिशील छात्र संगठन से जुड़ीं। आई.टी.आई. कोर्स करते हुए, उस संस्थान में छात्रों की यूनियन बनाई, इसकी बैठकों में पहले तो लड़कियों ने आने से मना कर दिया कि वे लड़कों के साथ एक्टिविज्म नहीं कर सकतीं। जब एक बैठक में अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति का मुद्दा उठाया गया तो अधिकांश सवर्ण लड़कों ने भी इस यूनियन से कत्ती काट ली। इन आयोजनों में अधिकांश दलित लड़के ही शामिल रहे लेकिन इससे रजनी तिलक का एक्टिविज्म बीच में नहीं रुका।

उन्होंने वर्ष 1978 में अच्छे अंकों से आई. टी. आई. पूर्ण की। इसके पश्चात वह विभिन्न स्त्रीवादी संगठनों और वामपंथी संगठनों से जुड़ी। वह बामसेफ की सक्रिय कार्यकर्ता बनीं, माननीय कांशीराम के कई कैडर कैम्प भी अटैंड किये। अंबेडकरवादी आंदोलनों और विचारधारा से जुड़ने के बाद वह 'दलित पैथर' की दिल्ली इकाई की संस्थापक सदस्य भी रहीं। रजनी तिलक कई संगठनों की संस्थापक सदस्य रहीं। वह 'दलित लेखक संघ' की संस्थापक सदस्य भी रहीं। दलित लेखक संघ की

कार्यकारिणी से असहमतियों के बावजूद संगठन को नहीं छोड़ा अपितु उसे अधिक लोकतांत्रिक बनाने हेतु निरंतर हस्तक्षेप करके महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रजनी तिलक ने 'अखिल भारतीय आंगनबाड़ी यूनियन' भी बनाई। उन्होंने दलित एवं महिला उत्पीड़न के विभिन्न मामलों में फैक्ट फाइंडिंग करके महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने 'अभिमूकनायक' से लेकर 'आंदोलित' तक संपादन का कार्य भी बखूबी किया। एक्टिविज्म तो उनके जीवन का पर्याय ही बन गया था। उनके लेखन में भी एक विश्वदृष्टि का परिचय मिलता है। रजनी तिलक की ये सभी भूमिकाएं बहुत महत्वपूर्ण हैं। स्त्री एकता के लिए किए गए उनके प्रयासों को विशेष रूप से याद किया जाता है, उन्हें दलित महिला आन्दोलन और 'अखिल भारतीय दलित लेखिका मंच' की पर्याय के रूप में याद किया जाता है।

बकौल मुकेश मानस, "रजनी तिलक उन बहुत कम लोगों में से थीं जो व्यक्ति से व्यक्ति, विचार से विचार और विचारधारा से विचारधारा के बीच की कड़ी होते हैं। उन्होंने दलित विचारधारा को मार्क्सवादी विचारधारा के साथ जोड़ा। इंडियन फेमिनिज्म को अम्बेडकराइड फेमिनिज्म के साथ जोड़ा। और दलित फेमिनिज्म को ग्लोबल अम्बेडकराइड फेमिनिज्म के साथ जोड़ा। वे इन सबके बीच की कड़ी थीं।"⁷

एक्टिविज्म और अकादमिक क्षेत्र में इतनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली रजनी तिलक अपनी निजी जिंदगी में बहुत सहज और सरल थीं जबकि उनकी निजी जिंदगी इतनी सरल नहीं थी, बेहद जटिल थी। जातीय एवं लैंगिक आधार पर विषमताओं को झेलने वाली और आर्थिक अभावों में पली-बढ़ी लड़की समतामूलक समाज के निर्माण का स्वप्न देखती है। युवावस्था में वामपंथी विचारों वाले प्रगतिशील व्यक्ति के प्रेम में पड़कर उससे विवाह करती है। विवाह के समय उनके उत्साही मन में कुछ इस तरह के विचार चल रहे थे—

"दो प्राणी समाज परिवर्तन के वाहक कई परंपराओं को तोड़कर एक नए ढाँचे की डोर में बंध गए। प्रेम की वो डोर, विश्वास की वो डोर, जो सभी ढाँचों को लचीला कर दे, ऐसी डोर के साथ हम दोनों बंध गए। सुबह का उगता सूरज हमारा था ...या हम अँधेरे की ओर बढ़ रहे थे, इसका इल्म मुझे नहीं था।"⁸

रजनी तिलक को समतामूलक गृहस्थी और संबंधों के उगते सूरज का आभास हुआ था, जो अंततः उनके लिए विषमताओं और अपमान का अँधेरा सिद्ध हुआ। विवाह के उपरांत उन्होंने पाया कि सामाजिक परिवर्तन और क्रांति का झंडा उठाने वाला उनका पति वास्तव में प्रगतिशील नहीं बल्कि कूटमगज है, वह उनके प्रति गरिमामयी व्यवहार नहीं करता, वह उन्हें पत्नी का सम्मान तो क्या देता, अपनी पत्नी को मनुष्य भी नहीं मानता। लंबे समय तक रजनी तिलक मानसिक उत्पीड़न सहते हुए घुटन भरी जिंदगी जीती हैं। फिर वह दिन भी आता है, उनका तलाक हो जाता है। वह अपनी बेटी की जिंदगी सँवारने के लिए प्रतिकूल जीवनधारा को चीरते हुए आगे बढ़ती है। इन प्रतिकूल परिस्थितियों में वह टूटकर बिखरती नहीं बल्कि दृढ़ता का परिचय देते हुए एक्टिविज्म के पथ पर आगे बढ़ती जाती हैं, वह स्त्री सशक्तिकरण-दलित स्त्री सशक्तिकरण के अपने लक्ष्य से कहीं नहीं भटकती। अंततः उनका जीवन स्त्री एकता, दलित एकता एवं विभिन्न अस्मिताओं की एकता का स्कूल बन जाता है।

निष्कर्ष

हर व्यक्ति के सभी स्वप्न पूर्ण हो जाएं, यह जरूरी नहीं लेकिन स्वप्नों का होना और उनके लिए संघर्षरत रहना भी अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। रजनी तिलक ने समतामूलक समाज के निर्माण का स्वप्न देखा और उसके लिए निरंतर संघर्षरत रहीं यद्यपि उनके इस स्वप्न का पूर्ण होना शेष है तथापि दलित महिला सशक्तिकरण के लक्ष्य को एक हद तक प्राप्त भी किया। 'अखिल भारतीय दलित लेखिका मंच' तैयार करके उन्होंने अपना एक ड्रीम प्रोजेक्ट पूरा कर लिया था। इसके पूर्व वह एक्टिविज्म के क्षेत्र में कई कीर्तिमान स्थापित कर चुकी थीं, लेखन और संपादन के क्षेत्र में भी एक पहचान बनाई थी। यद्यपि रजनी तिलक ने अपनी पहचान को दलित स्त्रियों की सामूहिक पहचान के साथ जोड़ा तथापि उन्होंने स्त्री एकता पर बल दिया। सवर्ण एवं अभिजात्यवादी स्त्री विमर्श के दोहरेपन पर सवाल उठाते हुए स्त्रीवादियों को डिकास्ट और डिक्लास करने के लिए प्रेरित किया। दलित लेखकों के पुरुषवाद पर भी वह निरंतर सवाल उठाती रहीं। 2017

में रजनी तिलक की आत्मकथा 'अपनी ज़मी अपना आसमां' प्रकाशित हुई। अभी उनकी आत्मकथा का दूसरा भाग प्रकाशित होना था, लेकिन इसके पूर्व ही उनकी असमय मृत्यु हो गई।

संदर्भ

1. रजनी तिलक, 'अपनी ज़मी अपना आसमां', ईशा ज्ञानदीप, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृ. 12
2. रजनी तिलक, पदचाप, कदम प्रकाशन, मॉडल टाउन, दिल्ली, 2002 पृ. 41
3. अरुण कुमार प्रियम, रजनी तिलक का स्त्री चिंतन, (रजनी तिलक दलित स्त्री का नवाख्यान, संपादक रजनी अनुरागी-, मुकेश मानस(, अधिकरण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण 2020, पृ. 22
4. रजनी तिलक, पदचाप, कदम प्रकाशन, मॉडल टाउन, दिल्ली, 2002 पृ. 83
5. वही
6. रजनी अनुरागी, जमीन से अपनी जमीन के मकाम तक (रजनी तिलक, दलित स्त्री का नवाख्यान, संपादक रजनी अनुरागी-, मुकेश मानस(, अधिकरण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण :2020, पृ. 107
7. मुकेश मानस, मेरी धावक दीदी रजनी तिलक, (रजनी तिलक दलित स्त्री का नवाख्यान, संपादक रजनी अनुरागी-, मुकेश मानस(, अधिकरण प्रकाशन, दिल्ली, प्रथम संस्करण :2020, पृ. 117
8. रजनी तिलक, 'अपनी ज़मी अपना आसमां', ईशा ज्ञानदीप, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण 2017, पृ. 120